

संवाद

शिक्षा से जुड़ी राष्ट्रीय नीति न केवल व्यक्ति को प्रभावित करती है बल्कि समाज और राष्ट्र को भी प्रभावित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनेक अनुशंसाएँ हैं जिनके बारे में जानना, समझना उनके क्रियान्वयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मानव-निर्माण और मूल्य विकास इस नीति के मुख्य सिद्धांतों में से एक हैं। ‘कहानी अध्ययन-अध्यापन में चयन, नैतिक मूल्य एवं शिक्षा का द्वंद्व’ लेख पाठ्यपुस्तक में शामिल कहानियों के विस्तृत फलक की समीक्षा करते हुए भाषा शिक्षण संबंधी अनेक संभावनाओं को उजागर करता है। भारतीय सिनेमा और समसामायिक सामाजिक स्थितियाँ जिस तरह से एक-दूसरे को उद्धाटित करती हैं और परस्पर भावी संभावनाओं को मनोबल प्रदान करती हैं— वह अद्वितीय है। ‘शिक्षा— चाक एंड डस्टर के इर्द-गिर्द’ लेख इन्हीं संभावनाओं और उससे पूर्व कठोर यथार्थ को प्रस्तुत करता है। पढ़ना मात्र एक क्रिया ही नहीं है अपितु एक कौशल भी है। पढ़ने के कौशल का छोटी उम्र से विकास, बच्चों के समग्र विकास में सहायक होता है। ‘आधारभूत साक्षरता का घटक ‘पढ़ना’— सृजन एवं संवर्धन’ लेख बच्चों में पढ़ने के कौशल को बढ़ाने के तरीकों और उसमें शिक्षकों एवं परिजनों की भूमिका को रेखांकित करता है। पढ़ने के साथ-साथ लिखने के कौशल का विकास भी बच्चों में किया जाना आवश्यक है। ‘राजकीय एवं निजी विद्यालयी प्राथमिक स्तरीय छात्रों द्वारा गृहकार्य में की जाने वाली वर्तनीगत त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन’ लेख, तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से वर्तनीगत त्रुटियों का विश्लेषण करते हुए उसके कारणों और निवारणों को उल्लेखित करता है।

व्यक्ति के जीवन में उसकी मातृभाषा एक विशेष स्थान रखती है। मातृभाषा में आंचलिकता का पुट विद्यमान होता है। यही पुट भाषा को मात्र भाषा तक ही सीमित नहीं रखता अपितु उसे संप्रेषण का एक ऐसा माध्यम बना देता है जिसमें समाज, संस्कृति और सभ्यता का अंश बहुत ही सूक्ष्मता से विद्यमान होता है। मातृभाषा का महत्व बहुभाषी देश भारत में और भी बढ़ जाता है जिसका उल्लेख ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बहुभाषावादी पहल’ लेख में किया गया है। यह लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित भाषा संबंधी नीतियाँ विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार लाभदायक साबित हो सकती हैं, इसकी चर्चा करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा के साथ-साथ भारतीय कला, सभ्यता और संस्कृति के विकास से संबंधित भी कई प्रावधान किए गए

हैं। ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन’ लेख भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक विभिन्नताओं, आवश्यकताओं और महत्व को ध्यान में रखते हुए किए गए इन्हीं प्रावधानों की विवेचना करता है।

बालगीतों का बच्चों के जीवन में विशिष्ट महत्व होता है। ‘चकई की चकदुम’ लेख बच्चों की दुनिया में बालगीतों की उपयोगिता को उजागर करता है। एक ओर बालगीत बच्चों के भाषा ज्ञान, शब्द भंडार और साहित्य के प्रति रुचि को तो बढ़ाते हैं वहीं दूसरी ओर उन्हें सामाजिक भी बनाते हैं। यह बच्चों में अपने आसपास के वातावरण से लगाव और परिजनों व मित्रों के प्रति अपनत्व की भावना को भी बढ़ाते हैं। बाल साहित्य के अनेक महत्व हैं और इन्हीं को ध्यान में रखते हुए बच्चों को अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध करवाना बेहद आवश्यक है। कोई भी शिक्षण संस्थान पुस्तकालय के बिना अधूरा है। पुस्तकालय वह अनुपम संसाधन है जो हमें पुस्तकों जैसी अमूल्य निधि प्रदान करता है। ‘पुस्तकालय— विद्यालय का शैक्षणिक केंद्र’ नामक लेख विशेषकर विद्यालयों में पुस्तकालयों की अपरिहार्य भूमिका को बताता है। कोविड-19 महामारी जैसी विकट स्थिति में पुस्तकालय बच्चों के अध्ययन में किस प्रकार अपना सहयोग प्रदान कर सकता है इस पर ‘कोविड-19 महामारी में पुस्तकालय की बदलती भूमिका’ लेख चर्चा करता है।

‘सामान्य अध्ययन द्वारा प्राथमिक स्तर से बच्चों में संवाद, समझ और सामर्थ्य का विकास’ लेख कुछ गतिविधियों के द्वारा सामान्य अध्ययन के संवर्धन पर प्रकाश डालता है। इसके साथ ही यह लेख सामान्य अध्ययन का ज्ञान कैसे उनमें जिज्ञासा और आत्मविश्वास को बढ़ाता है बिंदु पर भी चर्चा करता है। बच्चों का संख्यात्मक ज्ञान दीर्घकालिक और गहन होना चाहिए जिसके लिए उचित गतिविधियों और उपकरणों का चुनाव किया जाना चाहिए। अबेकस आधारभूत संख्यानात्मक ज्ञान को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण उपकरण है। ‘उत्तराखंड के प्राथमिक स्तर के छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं पर अबेकस सीखने के प्रभाव का एक अध्ययन’ लेख संज्ञानात्मक विकास में अबेकस की भूमिका को रेखांकित करता है। ज्ञानार्जन का महत्वपूर्ण स्रोत हमारा पर्यावरण यानी हमारा आसपास होता है। अवधारणा मानचित्र की समझ और उसका प्रयोग पर्यावरण अध्ययन में एक महत्वपूर्ण साधन साबित हो सकता है। ‘अवधारणा मानचित्रण द्वारा प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय अध्ययन का शिक्षण-अधिगम तथा आकलन’ लेख अवधारणा मानचित्र की उपयोगिता एवं इसके उपयोग संबंधी प्रशिक्षण के महत्व को उजागर करता है। शिक्षा, संस्कृति और समाज एक दूसरे के साथ अभिन्न रूप से संबद्ध हैं। प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है और शिक्षा इसी समाज और संस्कृति को पोषित करती है। ‘शिक्षा की भारतीय दृष्टि’ लेख शिक्षा से जुड़ी इन्हीं बारीकियों को न केवल प्रस्तुत करता है अपितु भारतीय

समाज की शिक्षा और शिक्षा की भारतीयता को विस्तार देता है। विद्यालय को समाज का लघुरूप माना जाता है और समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव विद्यालय पर भी पड़ता है। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति समाज का दृष्टिकोण बहुत महत्व रखता है। यहाँ तक कि विद्यालय की दीवारें भी इससे अछूती नहीं हैं। 'बहु-सांस्कृतिक समाज का विद्यालयों पर प्रभाव' लेख इसी प्रभाव को उजागर करता है।

प्रस्तुत अंक में 'विशेष' के अंतर्गत निष्ठा कार्यक्रम के प्रशिक्षण मॉड्यूल के पाँचवें अध्याय 'विद्यालय में स्वास्थ्य और कल्याण' को शामिल किया गया है। उम्मीद है कि इस अध्याय का अध्ययन आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

अकादमिक संपादक